अथ निर्माल्योत्तारणम्

(अर्थात् देवार्चन में निवेदित पत्र पुष्प के बासी होने पर हटाने का नियम)

प्रातःकाले सदा कुर्य्यान्निर्माल्योत्तारणं बुधः ।

तृषिताः पशवो बद्धाः कन्यका च रजस्वला ।

देवता च सनिर्माल्या हन्ति पुण्यं पुराकृतम् ॥

अत्रिस्मृति

अत्रि स्मृति में उक्त है- तृष्णार्त्त पशु रज्जुबद्ध रहने से, अनूढ़ावस्था में कन्या 'रजःस्वला' होने पर एवं देवता निर्माल्य संयुक्त अवस्था में अवस्थित होने से पूर्व सञ्चित पुण्यसमूह विनष्ट होते हैं ॥

देवमाल्यापनयनं देवागारे समूहनम् ।

स्नापनं सर्वदेवानां गो-प्रदानसमं स्मृतम् ॥

-नारसिंहे श्रीयमोक्तौ

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

नरसिंह पुराण में श्रीयम की उक्ति है-देवनिर्माल्य का अपसारण करने से, सम्मार्जनी के द्वारा देवालय मार्जन करने से एवं देवसमूह को स्नान कराने से गोदान तुल्य फल होता है ॥

यः प्रातरुत्थाय विधाय नित्यं,

निर्माल्यमीशस्य निराकरोति ।

न तस्य दुःखं न दरिद्रता च,

नाकालमृत्युर्न च रोगमात्रम् ॥

नारदपञ्चरात्र में वर्णित है - प्रातःकाल में जाग्रत होकर नित्यक्रिया समापन के अनन्तर श्रीकृष्णनिर्माल्य का अपसारण करे। ऐसा करने से रोग, दुःख, दारिद्र, अकालमृत्यु भय नहीं रहता है,

अरुणोदयवेलायां निर्माल्यं शल्यतां व्रजेत् ।

प्रातस्तु स्यान्महाशल्यं घटिकामात्रयोगतः ॥

अतिशल्यं विजानीयात्ततो वज्रप्रहारवत् ।

अरुणोदय में निर्माल्यापसारण न करने से निर्माल्य शल्य सदृश होता है। प्रभात में निर्माल्य अपसारित न होने से महाशल्य सदृश होता है, एवं निर्माल्यानपसारणावस्था में एक घटिका व्यतीत होने से अतिशल्य होता है। तत्पश्चात् वह वज्रप्रहार सदृश होता है।

अरुणोदयवेलायां शल्यं तत् क्षमते हरिः ॥

घटिकायामतिकान्तौ क्षुद्रं पातकमावहेत ।

मुहूर्त्ते समतिकान्ते पूर्ण पातकमुच्यते ॥

अतिपातकमेव स्यात् घटिकानां चतुष्टये।

मुहूर्त्तत्रितये पूर्णे महापातकमुच्यते ॥

ततः परं ब्रह्मवधो महापातकपञ्चकम् ।

प्रहरे पूर्णतां याते प्रायश्चित्तं ततो न हि ॥

अरुणोदय काल में निर्माल्यानपसारण जनित दोष को श्रीहरि क्षमा कर देते हैं, घटिका काल अतीत होने से निर्माल्य क्षुद्र पातक का सञ्चार करता है। मुहूर्त्त गत होने से पूर्ण पातक होता है। चारखण्ड अतीत होने से अति

पातक, मुहूर्त्तत्रय अतीत होने पर महापातक होता है, तत् पश्चात् ब्रह्महत्या एवं पञ्च महापातक का समान होता है। एवं प्रहर काल अतीत होने से उसका प्रायश्चित्त नहीं है।

निर्माल्यस्य विलम्बे तु प्रायश्चित्तमथोच्यते ।

अतिक्रान्ते मुहूर्तार्द्धे सहस्र जपमाचरेत् ॥

पूर्ण मुहूर्त्ते संजाते सहस्र सार्द्धमुच्यते ।

सहस्रद्वितीयं कुर्य्यात् घटिकानां चतुष्टये।।

मुहूर्त्त त्रितयेऽतीते अयुतं जपमाचरेत् ।

प्रहरे पूर्णतां याते पुरश्चरणमुच्यते ।

प्रहरे समतिक्रान्ते प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥

निर्माल्योत्तारणम् में विलम्ब होने से प्रायश्चित्त निम्नोक्तरूप है। एकदण्डस्वरूप मुहूर्त्त गत होने से सहस्र संख्यक मन्त्र जप करे। मुहूर्त्त पूर्ण होने से सार्ध सहस्र जप का विधान है। चार दण्ड अतीत होने से दो सहस्र जप करे। तीन मुहूर्त्त गत होने से अयुत संख्यक जप करे। प्रहरकाल अतीत होने से पुरश्चरण करने का विधान है, किन्तु प्रहर काल

अतीत होने पर प्रायश्चित्त नहीं है ॥